117½

Rupali chaubey

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी

(a) पारदर्शिता को प्रशासन में स्थान

प्रशासन का कल्याणकारी स्वरूप पारदर्शिता पर पारदर्शिता का अर्थ पारदर्शी, जनकेन्द्रित कार्यप्रणाली से परिचय की होता है। यह प्रशासन में जवाबदेहिता व उत्तरदायित्व को सुनिश्चित करती है।

2

(b) प्लेटो के अनुसार मनुष्य की प्रवृत्तियों को लिखो:

ग्रीक दार्शनिक प्लेटो के अनुसार मनुष्य की तीन प्रवृत्तियाँ होती हैं-

विवेक

साहसी

संयमी

2½

(c) वस्तुनिष्ठता।

अपने कार्यों व निर्णयों को कानून, नियमों, आचरण संहिता के आधार पर लेना।

जैसे पदों की नियुक्ति, संविदाओं की स्वीकृति, स्वास्थ्य लाभ की पुरस्कार, लाभों व कार्यों की संस्तुति आदि

इनके तर्कों व योग्यताओं के आधार पर लिया जाता है।

यहाँ ग (क) रख

2

(D) नैतिक मूल्यों को परिभाषित करो।

2 मनुष्य अपने जीवन में कुछ लक्ष्यों व उद्देश्यों को स्वीकार करता है तथा उन लक्ष्यों की पूर्ति में जो आदर्श रूप से स्वीकार किये जाते हैं या सहायक होते हैं उन्हे नैतिक मूल्य कहते है।

- नैतिक मूल्य व्यक्ति को अनुरूप व गरिमापूर्ण बनाते हैं।

- उदा. :- दया, करुणा, प्रेम, सत्यनिष्ठा आदि

2

(E) इच्छामृत्यु का सिद्धांत लिखो।

इच्छा मृत्यु का आशय बीमार व्यक्ति की मंजूरी के बाद जानबूझकर ऐसी दवाई देना जिसमें मरीज की मौत हो जाये।

- नीदरलैंड व बेल्जियम में वैध्य किंतु भारत में इच्छा मृ. कानून रूप से वैध्य नहीं

- कई विचारकों का कहना है जैसे प्राकृतिक रूप से जन्म होता वैसे मृत्यु भी प्राकृतिक होनी चाहिए।

- किंतु कोमा, पीड़ा युक्त पर्यावते आदि तो इच्छा मृत्यु 'सम्मानजनक मौत' का उदा. होगा।

2

(Mains Answer Sheet)

(f) The Problem of Rupee के लेखक

(ख) अभिक्षमता की तीन विशेषताएँ?

अभिक्षमता, आंतरिक सामर्थ्य को इंगित करती है जो उसके वर्तमान गुणों का समुच्चय तथा उसकी भावी क्षमताओं की ओर इंगित करता है
अभिक्षमता जन्मजात या अर्जित हो सकती है।

2.5

(ग) आचरण किसे कहते है?

आचरण से आशय आपके व्यवहार व चरित्र से लिया जाता जो आप, परिवार, समाज, संगठन आदि में करते है।
आचरण को सही दिशा में निर्देशित करने के लिए नीतिसंहिता व आचरण संहिता का निर्माण किया जाता है।

2

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

चार आर्य सत्य लिखो।

गौतम बुद्ध ने चार आर्य सत्यों की बात कही जाती है

चार आर्य सत्य
- दुःख → जीवन दुःखों से भरा हुआ
- दुःख समुदाय → दुःख का कारण प्रतीत्यसमुत्पाद के माध्यम से व्याख्या किया
- दुःख निरोध → दुःख निरोध को (तृष्णा के नाश से) निर्वाण कहा।
- दुःख निरोध गामिनी → दुःख निरोध का अष्टांगिक मार्ग बताया।

करुणा क्या है?

प्राणी मात्र के लिए मंगल कामना का भाव निहित होता है

करुणा दुःखी एवं कमजोर व्यक्तियों या प्राणियों के प्रति उत्पन्न होने वाली ऐसी भावना जो उनकी कमजोर दुःखद स्थिति को समझने, समानुभूतिपूर्वक चिंता करने व उनके दुःखों को दूर करने के प्रयासों को प्रोत्साहित करती है।

दुःखियों एवं जरूरतमंदों की सेवा का भाव निहित होता है।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी

(ख) कार्य पेशेवर के साथ :-

किसी भी देश के शासन का सुशासन पूर्वक संचालन के लिए लोक सेवकों की आवश्यकता होती है जिसके कार्य –

- कानून - व्यवस्था को बनाए रखना।
- नीतियों /कार्यक्रमों का कुशलतापूर्वक कार्यान्वयन।
- नीतियों के निर्माण में विकल्प व सलाहकार होते।
- जनहित में कार्य करना।
- लोगों को सार्वजनिक सेवाएं प्रदान करना।

(ग) नैतिक संहिता व आचरण संहिता में अंतर

नैतिक संहिता	आचरण संहिता
नैतिक नियमावली जो सदस्यों के व्यवहार व निर्णय लेने की प्रक्रिया का मार्गदर्शन करता है।	नियमों का संग्रह हो जो किसी संस्थान या संगठन के सदस्यों के आचरण को नियमित व निर्देशित करता है
उल्लंघन पर दण्ड नहीं	उल्लंघन पर दण्ड का प्रावधान

(Mains Answer Sheet)

(8) मनोवृत्ति ईर्ष्याग्रस्त

(N) The मिमेसिस के लेखक

(O) The Politics के लेखक

- The Politics राजनीति पर आधारित कृति है
- लेखक - ग्रीक दार्शनिक अरस्तू है
- इस रचना में इन्हों व्यक्ति की विशेषता व कर्तव्य के बारे में बताया है

Q. (b) सामाजिक सुधार आंदोलन के प्रणेता के रूप में राजाराम मोहन राय की भूमिका स्पष्ट करो?

राजाराम मोहन राय को आमतौर पर आधुनिक भारत के समाजसुधारकों में अग्रणी व भारतीय पुनर्जागरण के जनक के रूप में जाना जाता है तथा इन्होंने ही तत्कालीन समाज में फैली कुरीतियों को उजागर किया।

सामाजिक सुधार आंदो. के प्रणेता के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में राजाराममोहन की भूमिका इसप्रकार है =)

राजाराम मोहन राय की भूमिका

- सामाजिक क्षेत्र
- धार्मिक क्षेत्र
- राजनीतिक
- शिक्षा के क्षेत्र में

सामाजिक क्षेत्र => जाति प्रतिप्रथा, छुआछूत, ऊँच-नीच की भावना का तीव्र विरोध किया।

नारी उत्थान के समर्थक उन्होंने बालविवाह, बहुविवाह, बहुपत्नीप्रथा का विरोध

सती प्रथा के विरोध में व्यापक कार्य, व उसको समाप्त किया

बाल विवाह, बहुविवाही विवाहप्रथाओं का विरोध

धार्मिक क्षेत्र => मूर्तिपूजा का विरोध

=> वेदों, उपनिषदों की तार्किक व्याख्या की।

- परम्पराओं के अंधविश्वासों का विरोध किया
- एकेश्वरवाद या अद्वैतवाद पर बहुदेववाद का खंडन
- धार्मिक सहिष्णुता

राजनीतिक क्षेत्र => प्रेस तथा भाषण की स्वतंत्रता पर बल दिया

- नागरिकों के अधिकार व विधि के शासन आदि

शिक्षा => पाश्चात्य शिक्षा के पक्षधर एवं

- स्त्री शिक्षा के समर्थक

इस तरह राजा राममोहन ने अनेक क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभाई इसलिए उन्हें भारतीय राष्ट्रवाद का अग्रदूत कहा जाता है।

4

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्लेटो के न्याय सिद्धांत की व्याख्या के विचारों को स्पष्ट करें?

प्लेटो एक ग्रीक दार्शनिक है व सुकरात के शिष्य है, इन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'रिपब्लिक' में न्याय के सिद्धांत की व्याख्या की व न्याय के दो स्तर व्यक्तिगत व राज्य पर विवेचना किया है।

प्लेटो ने न्याय को विवेक, साहस व संयम के रूप में समझाया है जिसमें कहा विवेकी वर्ग शासक बने, साहसी व्यक्ति योद्धा व संयमी व्यक्ति उत्पादन का कार्य करे। ये तीनों एक दूसरे में हस्तक्षेप नहीं करेंगे तो न्याय की स्थापना होगी।

इसी न्याय को प्लेटो ने दो स्तरों पर स्थापित किया

व्यक्ति के स्तर पर | राज्य के स्तर पर

व्यक्ति के स्तर पर न्याय => जो व्यक्ति अपने विवेक से साहस व संयम को नियंत्रित करता है उसमें न्याय सद्गुण की उत्पत्ति होती है
- ऐसा व्यक्ति जीवन में न्यायपूर्ण आचरण करेगा।

=> यह अपने जीवन में आने वाली कठिनाईयों को साहस के साथ चालनाओं को संयम द्वारा नियंत्रित करता है इसी विदेशी ने प्लेटो कहते है न्याय मानव आत्मा की उचित अवस्था है

3) राज्य के स्तर पर न्याय

=> राज्य आत्मा का वृहत रूप है अतः यदि राज्य में विवेकी वर्ग शासन करे, साहसी वर्ग रक्षा करे तथा संयमी वर्ग उत्पादन का कार्य करे तथा दूसरों के कार्यों में कोई हस्तक्षेप न करे तो फिर न्याय की उत्पत्ति होती है

- प्लेटो ने न्याय को अहस्तक्षेप का सिद्धांत बताया है

4

इस तरह प्लेटो ने न्याय को प्रस्तुत किया जिसकी वर्तमान में विधायिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका द्वारा अपने कार्यों को करने व एक दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप न करने पर न्याय की अवधारणा साकारित होगी।

(5) नव-वेदांत के संदर्भ में राधाकृष्णन के विचारों को स्पष्ट कीजिये?

राधाकृष्णन एक महान दार्शनिक थे व उनकी हिन्दू जीवन दर्शन के नैतिक व आध्यात्मिक विचारों में गहन निष्ठा थी। वह निर्वेदवाद में विश्वास करते हुए यह नववेदांती परंपरा के सिद्धांत स्वीकारते थे।

नव-वेदांत में राधाकृष्णन के विचारों को इस प्रकार व्यक्त करते है-

वे वेदांत दर्शन की व्यवहारिक व योगानुकूल व्याख्या करते है।
नैतिक नव जागरण का संदेश दिया।
मानवतावादी दृष्टिकोण का समर्थन किया।
वे मानवीय मूल्यों एवं मानव की गरिमा एवं महत्ता की रक्षा की बात करते है।
व्यक्तिगत मुक्ति के स्थान पर मानव कल्याण को जीवन का परम लक्ष्य मानते है।
व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास पर बल देते है।
व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक व आध्यात्मिक विकास की बात करते है।

जीवन व जगत के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखते हैं, वे जगत से पलायन की बजाय जीवन व जगत में सक्रियता धर्मक मूल्यों के पालन की बात करते हैं।

- धर्म के आध्यात्मिक पक्ष व पश्चिम के आधुनिक पक्ष से समन्वय करना चाहते थे।

इस तरह विवेकानन्द ने नव-वेदांत में अपने विचारों को प्रस्तुत किया जो आधुनिक युग में प्रासंगिक प्रतीत होते जो मानव के कल्याण को अंतिम लक्ष्य मानते हैं।

(Mains Answer Sheet)

चौखंबा राज्य की अवधारणा स्पष्ट करें।

राम मनोहर लोहिया द्वारा यह चौखंबा राज्य की अवधारणा प्रस्तुत की थी। एक समाजवादी राजनेता, देशभक्त व स्वतंत्र चिंतक थे। इनकी समाजवादी विचारधारा मार्क्स, मार्क्स व गांधी की विचारधारा से प्रेरित [illegible] थी।

चौखंबा राज्य की अवधारणा निम्न प्रकार से स्पष्ट करते हैं राजनैतिक विकेंद्रीकरण के रूप में राज्य को चार स्तंभों में विभाजित किया।

चार स्तंभ

- पहला स्तंभ → गांव
- दूसरा स्तंभ → मण्डल (जिला)
- तीसरा स्तंभ → प्रांत (राज्य)
- चतुर्थ स्तंभ → केंद्र

(4) प्रत्येक स्तर पर कार्यों व शक्तियों का विभाजन कर दिया जाये।

कौटिल्य एकेडमी

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

गणों, गणसंघों व नगरों में पंचायतें स्थापित की जाये जो कल्याणकारी नीतियों व कार्यों की जिम्मेदारी ले।
इन्होंने जिला प्रशासन की व्यवस्था का फैसला भी दिया।

इस तरह कौटिल्य ने स्थानीय स्तर की व्यवस्थाओं को प्रस्तुत करते हुए विकेंद्रीकरण को बढ़ावा दिया जिसे वर्तमान में पंचायती व्यवस्था के रूप में देखा जा सकता है जरूरत है कि ग्रामीण स्तर पर वैधिक शक्तियाँ प्रदान की जाये ताकि कौटिल्य जी की संकल्पना को साकारित कर सकें।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

विवेकानंद जी के दरिद्रनारायण की व्याख्या कीजिये

विवेकानंद जी आधुनिक भारत के समाजसुधारक, दार्शनिक थे जिन्होंने शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लिया व विश्व को भारतीय संस्कृति से परिचित कराया तथा भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित किया।

विवेकानंद द्वारा दरिद्रनारायण को निम्न प्रकार से व्याख्यायित कर सकते हैं—

दरिद्रनारायण

→ मानववाद के आध्यात्मिक आधार को प्रतिपादित किया

→ दीन-दुखियों में व्याप्त मानते हुए दुखियों की सेवा को ईश्वर की सेवा माना

→ 'दरिद्र' को 'नारायण' माना तथा उनकी सेवा व उनके दुःख दर्दों को दूर करने का प्रयास किया।

→ उनका कहना था कि ~~एक~~ मात्र ईश्वर जिसको मैं ... एक मात्र ईश्वर जिस पर विश्वास करता हूं वह दीन-हीन, दुखी लोगों में निवास करता है।

→ उनका क्रांतिकारी रूप से मत थी
कहना था कि मंदिरों में से भगवान
को हटाकर दरिद्र को बसा देना चाहिए

इस तरह विवेकानंद ने मानवता की सेवा
को सबसे बड़ा धर्म माना साध्य ही यह
परमात्मा की प्राप्ती 'दरिद्र नारायण' की सेवा से
ही संभव बताया क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति में परमात्मा
का वास होता है। अंततः हम परमात्मा की सेवा
कर रहे हैं।

3.5

(Mains Answer Sheet)

अंबेडकर जी के आर्थिक विचार स्पष्ट कीजिये।

अंबेडकर जी एक राजनीतिक विचारक, राष्ट्रवादी नेता थे व इन्होंने दलितोत्थान व संविधान निर्माण में अहम भूमिका निभाई। भारतीय संविधान में अंबेडकर जी के विचारों को भी शामिल कर सभी वर्गों, दलितों के हितों व उनके अधिकारों को स्पष्ट किया।

अंबेडकर जी के आर्थिक विचार देखें तो वह समाजवाद से प्रभावित थे जो इस प्रकार है –

वह राज्य-समाजवाद को संवैधानिकरण व कृषि क्षेत्र में स्थापित करना चाहते थे।

इनका मानना था कि बड़े उद्योग और इंजीनियरिंग, खनन, व्यापार, परिवहन आदि राज्य के अधीन हो व राज्य द्वारा इनका संचालन हो।

निजीकरण के विरोधी थे।

बुनियादी उद्योगों पर भी राज्य का अधिकार हो।

बीमा कंपनियों का राष्ट्रीयकरण हो जिससे लोगों के आर्थिक हितों की सुरक्षा। व राज्य की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।

कृषि का राष्ट्रीयकरण किया जाये व इसे उद्योगों का दर्जा प्राप्त हो।

वह चाहते थे कि राज्य भूमि को निश्चित मानदण्डों के आधार पर कृषकों में विभाजित

फैलायें, तथा भाग जाता है विभिन्न वर्गों
से मिलकर बने
गांव में भूमि का वितरण समान रूप से
हो असमानता न रहे।

इस तरह अंबेडकर समाजवादी विचार
धारा से प्रेरित होकर संसाधनों के केंद्रीकरण की
जगह विकेंद्रीकरण पर बल दिया ताकि सभी व
व नागरिकों में समानता स्थापित की जा सके
कोई व्यक्ति रोटी के लिए न तरसे।

4

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

गांधी जी के ग्रामराज्य की संकल्पना को लिखो?

गांधी जी एक स्वतंत्रता सेनानी, दार्शनिक विचारक आदि थे जिन्हें भारत में राष्ट्रपिता की संज्ञा दी जाती है। वह भारत में ग्रामराज्य को लाना चाहते थे जो वर्तमान में भी आवश्यकता है।

गांधी जी के ग्रामराज्य की संकल्पना को इस प्रकार देख सकते हैं-

- राज्य में समानता, स्वतंत्रता व सामाजिक न्याय स्थापित हो।
- छुआछूत, ऊँच-नीच की भावना न हो।
- सर्वोदय का सिद्धान्त हो अर्थात सभी का सब प्रकार से उदय हो।
- कुटीर उद्योग व लघु उद्योगों को बढ़ावा दिया जावे।
- शक्तियों का विकेन्द्रीकरण किया जावे।
- आर्थिक क्षेत्र में ट्रस्टीशिप की अवधारणा जिससे गरीबों का कल्याण हो सके।
- पंचायती राज के पक्ष में थे।
- अहिंसा पर बल, औद्योगीकरण का विरोध किया।
- अहिंसात्मक प्रकार से देश की बुराईयों को दूर करना।
- सभी धर्मों का सम्भाव, सर्वधर्म समभाव होना।

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार
मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

वह राजनीति में नैतिकता की बात करते थे
राज्य को सभी धर्मों के अनुसार कल्याण धर्म के
आंतरिक पक्ष (दया, करुणा, प्रेम आदि) से
संचालित होना चाहिए।
सर्वधर्मों का प्रचार-प्रसार हो।
वह अंतिम रूप से राज्य के पक्ष में नहीं था अगर
गान्धी का मानना था कि जब राज्य ने अत्याचार करता है तो राज्य
आवश्यक किंतु आगे चलकर जब सभी लोग कृत्य
व कर्तव्यों से संचालित होने लगे पाप न बचे तो
राज्य को समाप्त कर देना चाहिए।

इस तरह गांधी जी के राम राज्य को देखा जा सकता जिसकी कुछ बातों को हमारे संविधान द्वारा ग्रहण किया गया है लेकिन कुछ अव्यवहारिक प्रतीत होती है किंतु उनके विचारों व बातों को वचन, कर्म से लागू करने पर आदर्शात्मक रूप से राम राज्य स्थापित किया जा सकता है।

4.5

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

(4) सांवेगिक बुद्धि से क्या अभिप्राय है? इसके आयामों की चर्चा कीजिये।

सांवेगिक बुद्धि, मनुष्य की ऐसी क्षमता है जिससे व्यक्ति स्वयं के संवेगों को पहचानता है, समझता है एवं उनके प्रभाव का आकलन करता है एवं उनको नियंत्रित व प्रबंधित करते हुए वांछित उपलब्धियाँ प्राप्त करता है जिससे उपलब्धियाँ भी उपलब्ध करा रहा हो।

सांवेगिक बुद्धि के आयामों को जानने के लिए निम्न क्षेत्रों पर दृष्टि डालेंगे -

सांवेगिक बुद्धि के आयाम

सामाजिक क्षेत्र	राजनैतिक	प्रशासनिक	अन्य

सामाजिक क्षेत्र :) यदि व्यक्ति सांवेगिक बुद्धि से युक्त है तो व्यक्ति वह परिवार व समाज में संतुलित स्थापित करेगा। समाज में आर्थिक, लड़ाई, तथा अपने संबंधों को अच्छे नियंत्रित करेगा।

राजनैतिक क्षेत्र :) यदि नेतागण सांवेगिक बुद्धि से युक्त होंगे तो लोगों की समस्याओं संवेदनशीलता से सुनेंगे।

Good

नीतियों के निर्माण ... आवश्यकताओं के अनुपात करेगी।

प्रशासनिक क्षेत्र => प्रशासक यदि पर वृत्ति से मुक्त होगा तो जनकेन्द्रित कार्य करेगा। लोगों की वेदनाओं को समझकर त्वरित कार्यवाही करेगा।

धार्मिक => धार्मिक क्षेत्र में यदि लैंगिक जातिगत वृत्ति से मुक्त सभी धर्मों के प्रति समभाव की भावना रखेंगे।

इस तरह जातिगत वृत्ति के आयामों को देख सकते हैं जिनके होने पर समाज हित, देश, जनहित में कार्यों का कल्याण रूप से संचालन होगा।

(Mains Answer Sheet)

(3) मनोवृत्ति के निर्माण में रुचि का महत्व स्पष्ट करो?

मनोवृत्ति का आशय किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना, स्थान व आदेश के प्रति व्यक्ति की धारणा विचार उसे पसंद-नापसंद करने का भाव तथा निर्माण के प्रति आर्पणरते शीलनरता से लिया जाता है।

वहीं रुचि में किसी व्यक्ति, वस्तु, के संदर्भ में विशेष लगाव व उत्सुकता में आगे बढ़ते अनेको पसंद व मनोविनोद आत्म बढ़ाते व वहीं कार्य करते है।

मनोवृत्ति के निर्माण में रुचि के महत्व को निम्न प्रकार से समझ सकते है

मनोवृत्ति के निर्माण

व्यक्ति विशेष में रुचि	वस्तु विशेष	क्षेत्र विशेष में रुचि	स्वभाव या आदत

व्यक्ति विशेष में रुचि => यदि किसी महान व्यक्ति में रुचि व उसके विचारों को पसंद व उन्हीं का अनुसरण करते।

वस्तु विशेष => यदि किसी पाठ्य पुस्तक में रुचि होने हम उस वस्तु को पसंद करने लगते है

क्षेत्र विशेष => किसी विशेष क्षेत्र जैसे राजनीतिक क्षेत्र रुचि होने पर मनोवृत्ति

प्रश्न संख्या

(Mains Answer Sheet)

उपयोग निषेध के प्रति रुचि होगा नहीं तब स्वच्छता में स्वभाव या आदत [illegible] रुचि उत्पन्न तो होगे साफ-सफाई रखेगो।

इस तरह रुचि, मनोवृत्ति को सकारात्मक मनोवृत्ति का निर्माण करती है अतः रुचि मनोवृत्ति सकारात्मक तीव्र गति से काम करने के लिए प्रेरित करती हैं।

KAUTILYA ACADEMY

4

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी

(7) आचरण संहिता क्या है? प्रशासन में इसकी उपयोगिता स्पष्ट करो?

आचरण संहिता किसी समाज या संगठन जैसे प्रशासन के आचरण को नियमित व निर्देशित करने के लिए बनाए गए नियमों का संग्रह होता है। इसके माध्यम से क्या करना चाहिए व क्या नहीं करना चाहिए इसकी जानकारी सदस्यों को दी जाती है व उल्लंघन पर दण्डात्मक कार्यवाही का भी प्रावधान होता है।

प्रशासन में इसकी उपयोगिता को निम्न प्रकार से देख सकते हैं =)

- ईमानदारी व प्रतिबद्धता =) अगर प्रशासक पेशेवर नैतिक पालन हेतु प्रतिबद्धता के साथ कार्य करेगा तो प्रशासन में सक्रियता व गतिशीलता बढ़ेगी।
- राजनीतिक तटस्थता व निष्पक्षता =) नीतियों के क्रियान्वयन के दौरान राजनेताओं से तटस्थ रहकर निष्पक्षता पूर्वक कार्य करने से तथा योजनाओं की पहुँच सही व्यक्ति तक होगी।
- कार्यकुशलता में वृद्धि =) आचरण संहिता के कारण लोग अपने कार्यों के प्रति सजग, कुशल व दुरुस्त रहेंगे जिससे वह कर्तव्य विमुख नहीं होंगे।

(Mains Answer Sheet)

नैतिक आचरण के → प्रशासनों में नैतिक
निर्माण — आचरण जैसे ईमानदारी, सत्यनिष्ठा आदि को बढ़ावा
देने के लिए।

सत्ता के दुरुपयोग → आचार संहिता के होने पर
को रोकने के लिए — प्रशासक अपने विवेकाधीन शक्तियों का दुरुपयोग नहीं
करेंगे।

इस तरह आचरण संहिता प्रशासन
को प्रभावी रूप से संचालित व जनकेन्द्रित
बनाने के लिए आवश्यक है किंतु जरूरी है कि
इनका दृढ़ता पूर्वक पालन किया जाये।

4

नैतिक मूल्यों के पतन के कारण लिखो ?

मूल्य वे है जो मानव के सोच, व्यवहार एवं कार्यों को मार्गदर्शित कर जीवन को परिष्कृत, सार्थक व गरिमापूर्ण बनाते है। इसमें दया, करुणा, प्रेम, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा आदि को लिया जाता है।

वर्तमान युग में इन मूल्यों का पतन होता जा रहा है जिसके पीछे निम्नलिखित कारक हैं :-

भौतिकवाद का प्रसार => विज्ञान व तकनीकी ने मानव को उपभोक्तावादी बना दिया और तब सादा जीवन उच्च विचार के स्थान पर खाओ पीओ मौज उड़ाओ की प्रवृत्ति पनप रही जिससे मूल्यों का पतन तीव्र गति से हुआ।

अनुचित कार्य संस्कृति का प्रभाव => संगठन में पारदर्शिता तथा जवाबदेहिता के अभाव ने संगठन में मूल्यों को गिरा दिया

आर्थिक असमानता => समाज में अमीर-गरीब के बीच खाई ने नैतिक मूल्यों को गिरा दिया।

संयुक्त परिवार का विघटन => न्यूक्लीयर फैमली की अवधारणा ने बच्चों में मूल्यों के पतन को बढ़ावा।

प्रश्न संख्या

औद्योगिकीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति ⇒ औद्योगिकीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति ने मशीनीकरण को बढ़ावा दिया तथा मानव को मानव नहीं बल्कि मशीन समझा जाने लगा जिससे मानवीय मूल्यों का ह्रास हुआ।

शिक्षण संस्थाओं ⇒ शिक्षण संस्थाओं अधिक लाभ कमाने की प्रवृत्ति व महान नेताओं, विचारकों के बारे में न बताया जाना नैतिक मूल्यों का ह्रास किया।

इस तरह बदलते युग में नैतिक मूल्यों के पतन को तीव्र किया गया तथा इसकी आवश्यकता को देखते हुए सिविल सेवा में नैतिक दृष्टिकोण को शामिल करना साथ ही स्कूलों में भी इस विषय को शामिल करने पर बल देना चाहिए।

4.5

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet) कौटिल्य एकेडमी

(9) नैतिक मूल्यों को स्थापित करने के लिए क्या उपाय किये जा सकते हैं?

नैतिक मूल्य वे व्यक्तियों मानदण्ड है जिसके आधार पर व्यवहार के सही-गलत, उचित-अनुचित, नैतिक-अनैतिक आदि का निर्धारण किया जाता है। वे जिसे वह जीवन में महत्वपूर्ण मानते हैं जैसे दया, करुणा, प्रेम, न्याय, ईमानदारी आदि।

नैतिक मूल्यों को स्थापित करने के लिए निम्न उपायों को अपना सकते हैं-

- परिवार के माध्यम से => दैनिक दिनचर्या के माध्यम से
  - माता-पिता ठीक से बच्चों के रोल मॉडल रहे

स्कूलों के माध्यम => शिक्षण संस्थायें बच्चों में चरित्र निर्माण
=> महान नेताओं, विचारकों के जन्मदिन मनाया जा सकता।

मीडिया के माध्यम => सूचनाओं को निष्पक्ष रूप से रखना
=> कार्यक्रमों के माध्यम से

नागरिक समाज => जनता को जागरूक व शिक्षित किया जाता है

इस्तीनत के माध्यम से नैतिक मूल्यों को बताया जा सकता इसके सबसे प्रमुख भूमिका परिवार व शिक्षण संस्थाओं की होती बाल्य अवस्था में मूल्यों को विकसित करते हैं।

4

KAUTILYA ACADEMY

भ्रष्टाचार को उजागर करने में मीडिया की भूमिका ?

किसी सरकारी कर्मचारी द्वारा अपने पद पर रहते हुए, व्यक्तिगत अधिकार का दुरुपयोग करते हुए किसी प्रकार का आर्थिक या अन्य प्रकार का लाभ प्राप्त करना भ्रष्टाचार है।

भ्रष्टाचार को उजागर करने में मीडिया की भूमिका को निम्न प्रकार से समझ सकते हैं-

- सरकार के क्रियाकलापों पर पैनी नजर रखकर।
- शासन - प्रशासन के भ्रष्टाचार को उजागर कर।
- लोगों को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक कर।
- सूचना के अधिकार, सिटीजन चार्टर आदि की लोगों के बीच जानकारी और जागरूकता।
- मीडिया सरकार पर दबाव डाल कर पारदर्शिता व जवाबदेहिता सुनिश्चित करा सकती है।
- स्टिंग ऑपरेशन कर।
- सरकारी योजनाओं पर वाद-विवाद कर सरकार पर दबाव।
- मीडिया जनता को नैतिक रूप से जागरूक कर।

उपरोक्त माध्यमों से मीडिया विधायिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका पर नियंत्रण करती है तथा सरकार को जनता के प्रति जवाबदेह बनाकर भ्रष्टाचार को अल्पतम कर सकती है।

4

KAUTILYA ACADEMY

(Mains Answer Sheet)

समर्पण की भावना लोक प्रशासन का आधार क्यों है?

सिविल सेवा के आधारभूत मूल्यों एवं आदर्शों को स्वीकार करते हुए निष्पक्षतापूर्वक सत्यनिष्ठा के साथ नागरिक सेवाओं के प्रति जवाबदेही, निष्पक्ष एवं पारदर्शिता वाली प्रवृत्ति ही सिविल सेवा के प्रति समर्पण का भाव दर्शाता है।

लोक प्रशासन में समर्पण होने पर इसके मायने होने पर निम्न होते हैं —

सार्वजनिक हित में कार्य करेगा।

जनता का विश्वास प्रशासन पर बढ़ता व प्रशासनिक व राजनैतिक कार्यों में जनभागीदारी बढ़ती है।

प्रशासन की जवाबदेही साकारित होगी

प्रशासकों में समर्पण की भावना होती तो उनमें निष्पक्षता, विनम्रता, संवेदनशीलता, सहानुभूति जैसे तत्वों का विकास होता है।

संवैधानिक मूल्य समानता, स्वतंत्रता आदि को केन्द्र से लागू किया जाता है।

लोककल्याणकारी राज्य की स्थापना होती।

अंत्योदय की संकल्पना साकारित होती।

योजनाओं का क्रियान्वयन सुचारु रूप से होता है। इत्यादि।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

अतः नीति प्रशासन का आवश्यक गुण
सर्वप्रथम है तभी गांधी होगा कल्याणकारी तभी
गांधी जी की लोकप्रिय की कल्पना साकार
होगी।

4

KAUTILYA ACADEMY

(b) विवेक के संकट में अंतरात्मा की भूमिका

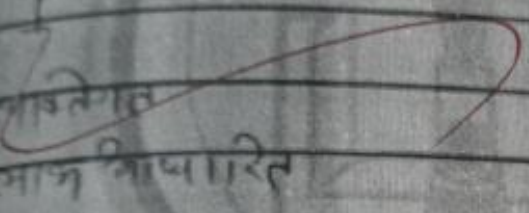

विवेक के संकट से आशय ऐसी स्थिति से है जब व्यक्ति के पास दो या दो से अधिक विकल्प हों और किसी एक विकल्प का चुनाव करना कठिन हो, जिन्हें चुनना अनिवार्य हो व इन विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन करने में व्यक्ति असमर्थ रहते हैं।

विवेक के संकट के दो प्रकार

व्यक्तिगत	द्विविकल्पीय
लाभ आधारित	नैतिक मूल्यों
नैतिक मूल्य	में विरोध
जैसे	
व्यक्तिगत हित व	– दोनों नैतिक
सामाजिक हित के	मूल्य से जुड़े
बीच	– विषम परिस्थिति
– सामाजिक हित	सहारा
	• गैरकानूनी व्यवहार

अंतरात्मा मानव के अंदर एक नैतिक शक्ति होती है जो किसी कर्म के उचित-अनुचित होने का वास्तविक ज्ञान प्रदान करती है व उचित काम करने के लिए प्रेरित करती है।

(Mains Answer Sheet)

- विवेक के संकट काल में नैतिक दुविधा में अंतरात्मा नेतृत्व प्रदान करती है —
- अंतरात्मा सदैव सार्वजनिक हित को वरीयता
- किसी के समय नियम व कानून की प्रक्रिया अपनाने की बजाय [illegible] यह अंतरात्मा की आवाज निर्धारित होती कि कौन सा कार्य सर्वोपरि है।
- निष्पक्ष [illegible] के होने पर अंतरात्मा की आवाज से निर्णय लिया जा सकता है जो उचित होता है।

इस तरह अंतरात्मा विवेक के संकट में उचित निर्णय लेने में सहायता करती है।

4

उत्तर संख्या 8

उपरोक्त अनुसार सरकारी संगठन में व्याप्त भ्रष्टाचार, लालफीताशाही, ईमानदारी, व्यावसायिकता, जवाबदेहिता, नैतिक कार्यवाही, नैतिक आदि मामलों से संबंधित हैं।

इसलिए [illegible] एक [illegible] होता है जिसके कारण निम्न कुरीतियाँ हैं-

कुरीतियाँ

भ्रष्टाचार (संगठन के [illegible]) - पैसों की अर्थ संस्कृति

- अधिकारियों में अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्धता, जवाबदेहिता का अभाव
- ईमानदारी न होना
- नैतिकता की कमी तथा प्रबंधन न होना

आदि कुरीतियाँ विद्यमान हैं।

(9) सरकारी संगठनों की सेवाओं की गुणवत्ता निम्न स्तर की होने के कारण?

सरकारी संगठनों में सेवाओं की गुणवत्ता निम्न स्तर होने के निम्न कारण हैं-

(Mains Answer Sheet)

सरकारी संगठनों में आचरण संहिता व नैतिक संहिता का अभाव है, अगर है भी इसको तो अच्छा तरीके से पालन नहीं होता।

सरकारी अधिक कर्मचारियों में नौकरी की सुरक्षा होने से वह अपने कार्यों में लापरवाही करते हैं।

संगठन में उत्साह व नेतृत्व क्षमता का अभाव देखने को मिलता है।

अधिकारियों में नैतिक मूल्यों का न होना जैसे ईमानदारी, जनसेवा का भाव, सत्यनिष्ठा आदि की कमी पाई जाती है।

सरकारी संगठनों में लालफीताशाही होने से भ्रष्टाचार व्याप्त होता है।

जनता में जागरूकता का अभाव।

सभी कागजात का कम्प्यूटरीकृत न होना।

जनता में मूल अधिकार, नागरिक चार्टर जैसे अधिकारों की जानकारी न होना आदि।

अधिकारियों में लार्डसाहब की मनोवृत्ति। आदि

उपरोक्त कारणों से सरकारी संगठन की सेवाएं निम्न स्तर की होती हैं जो जन सेवा न होकर व्यक्तिगत सेवा होती है।

(B) आप अपने स्टाफ को किस प्रकार से प्रेरित करेंगे कि उपर्युक्त कमियों का निदान हो जाये?

संगठन का [illegible] सौंपने
[illegible] होता है कि योगदान [illegible] जाता यह
[illegible] हो इसके लिए [illegible] कर्मचारियों
[illegible] का अपना मानना है। [illegible]
अनुरूप नियम के मानकों से
भी नवाचारिता परिवर्तन किया जा सकता है
कर्मचारियों [illegible] तथा कर्मचारियों की
[illegible] व नैतिक संहिता की कठोरता से
पालन करायें।

पुरस्कार व दण्ड का प्रयोग [illegible] कार्य करने
वाले पुरस्कार व प्रशंसा व कार्यों में [illegible]
दिखाने वाले और अनुशासनात्मक कार्यवाही।
संगठन में महान विचारकों के बारे में बताकर
जिससे वह उनकी बातों से प्रेरित हो सके।
स्वयं अपने कार्यों को त्वरित व ईमानदारी से
करेंगे तभी आपके संगठन के अन्य लोग आपसे
प्रेरित होंगे। आदि

आदि उपायों को अपनाकर संगठन की
कार्यसंस्कृति में परिवर्तन लाकर संगठन में
गतिशीलता लाकर जनकल्याण का कार्य करेंगे।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

Case Study 2

2 उपरोक्त प्रकरण में वंचितों के हितों, सरकारी व अभिजात्य स्कूलों में शिक्षा के मापदंड, [illegible] में अंतर, सामाजिक न्याय जैसे मुख्य [illegible] में बात की गई है

उपरोक्त मामले में एक पत्रकार [illegible] निम्न चुनौतियाँ हैं — [illegible] चुनौतियाँ

निशांत — समाजवादी विचारधारा, वंचितों के अधिकारों के प्रति संवेदनशीलता, पारिवारिक हित, तटस्थता जैसी चुनौतियाँ हैं

(a) क्या निशांत को भी अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में प्रवेश दिला देना चाहिए?

चूंकि इस प्रकरण में बताया गया कि निशांत सामाजिक रूप से संवेदनशील, सामाजिक समानतावादी विचारधारा, बुद्धिजीवी व प्रोफेसर है तथा वह असंगठित मजदूरों, महिलाओं और [illegible] के हितों में अपनी आवाज उठाते हैं। साथ ही वह पार्टी के टिकट के लिए भी [illegible] पड़ते हैं कि [illegible] राजनीतिज्ञों व अधिकारियों को अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में प्रवेश दिलाना चाहिए।

... तरह के आहतों के बाद ... को सरकारी स्कूल में प्रवेश दिला देना चाहिए।

गांधी जी कहते है कि हम जो परिवर्तन देखना चाहते है वह पहले स्वयं में लाया जाना चाहिए।

फिर सरकारी स्कूलों में प्रवेश दिलाने के पहले सरकारी स्कूलों द्वारा निम्नलिखित ... किया जा सकता है-

- सरकारी स्कूलों की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार
- योग्य शिक्षकों की नियुक्ति
- आधारभूत संरचना
- वैश्विक स्तर का पाठ्यक्रम आदि

साथ ही अभिजात्य स्कूलों में भी वंचित समुदाय को प्रवेश की व्यवस्था होने से सामाजिक न्याय स्थापित होगा।

क्या निशांत को बौद्धिक विमर्श त्याग देना चाहिए?

आलोचनाओं से डरकर बौद्धिक विमर्श त्यागना कोई बुद्धिमत्ता का काम नहीं। इसे निम्न बिंदुओं से समझा जा सकता।

- निशांत पहले से वंचितों के हितों के लिए आवाज उठाते आये हैं
- समाज में समानता स्थापित करने के लिए बौद्धिक विमर्श की आवश्यकता है

(Mains Answer Sheet)

जैसे सरकारी स्कूलों में जनता के पहले
कुछेक सुधार के मुद्दों को उठाया [illegible]
औपचारिक स्कूलों में हो रहे असमानता का
पुरजोर विरोध करना।
उपरोक्त के सिवा अन्य [illegible]
[illegible] को समान रूप से प्राप्त हो सके

क्या उन्हें अपने पॉलिसी के लोगों को समर्थ।
बैरवड़ा करना चाहिए?

4

(Mains Answer Sheet)

उन्हे अपने बच्चे को अंग्रेजी
स्कूल में पढ़ा देना चाहिए [illegible]
[illegible]
वह उन्होंने में कभी कहती भी [illegible]
गई
हिमांत की समाजवादी विचारधारा के कारण वे
सभी [illegible] पर सरकार की [illegible]
तथा [illegible] मानते हैं
[illegible] भी [illegible] वंचित हों के प्रति संवेदना भी रखते
व उनके कल्याण के लिए आवाज भी उठाते हैं।
अतः वह सहानुभूति, दया, नेतृत्वक्षमता आदि गुणों
से युक्त हैं।
प्रेरणीयता, समाजपरवाह होने के नाते लोगों से
आह्वान की व्याप्त सरकारी स्कूल में प्रवेश के लिए
प्रेरित

इन सबके बावजूद भी वह इन बातों को
व्यवहारिक रूप से अपने ऊपर लागू नहीं करते व
अपने बच्चे का प्रवेश अनिवार्य स्कूल में करने का
प्रयास करते हैं इसके पीछे का कारण सरकारी स्कूलों
में शिक्षा की गुणवत्ता व अन्य कुतिथ्याँ न होना है।

4

अंग्रेजी माध्यम क्यों
सामान्यतः कुलीन वर्ग अपने बच्चों का एडमिशन अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में कराते हैं, क्यों?

कुलीन वर्ग अपने बच्चों का एडमिशन अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में कराते हैं जिसके कारण हैं -
शिक्षा की गुणवत्ता अच्छा होना
आधुनिक सुविधाएं / बुनियादी ढांचा।
योग्य शिक्षकों की नियुक्ति।
अंतर्राष्ट्रीय स्तर का पाठ्यक्रम।
पढ़ाई के साथ अन्य गतिविधियों जैसे खेल आदि का होना।
अंग्रेजी माध्यम। आदि

उपरोक्त कारण अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में प्रवेश कराने के होते हैं, यदि यही सुविधाएं सरकारी स्कूलों में प्राप्त हो जाएं तो दोनों के बीच असमानता खत्म हो जाएगी व प्रत्येक अभिभावक अपने बच्चों को सरकारी स्कूल भेजेगा साथ ही समाज में अमीर-गरीब का भेद भी कम होगा।

4